॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ अथर्ववेद संहिता ॥

॥ अथर्ववेद॥

॥ अथ सप्तदशं काण्डम्॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त १ – अभ्युदयार्थप्रार्थना सूक्त 4

॥अथर्ववेद – सप्तदशं काण्डम्॥

सूक्त १ – अभ्युदयार्थप्रार्थना सूक्त

इंद्र रूप सूर्य की स्तुति, सूर्य की शक्तियां अनेक हैं परम ऐश्वर्य वाले सूर्य का वर्णन, सूर्य देव सभी के कल्याणकारी देव हैं

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमायुष्मान् भूयासम् ॥१७,१.१॥

अतिसमर्थ, सहनशील, शत्रुहनन के सहज स्वभाव से युक्त, वैरी को दबा डालने में सक्षम, नित्य विजेता, महाबली, अपने पराक्रम से दिग्विजय करने में समर्थ, स्वर्ग के विजेता, गौ(भूमि, इन्द्रियों और गौओं) के विजयी, वैभव सम्पदा के विजेता, इन्द्ररूप सूर्यदेव को हम आवाहित करते हैं, उनकी अनुकम्पा से हम दीर्घायुष्य प्राप्त करें ॥१७,१.१॥

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम् ॥१७,१.२॥

अतिसमर्थ, सहिष्णुतायुक्त, शत्रुहनन के सहज स्वभाव से युक्त, वैरी पर दबाव डालने में सक्षम, नित्य विजेता, महाबलिष्ठ, अपने पराक्रम से दिग्विजय में सक्षम, स्वर्ग के विजेता, पृथ्वी, इन्द्रियों और गौओं के विजेता, ऐश्वर्यों को जीतने वाले, इन्द्ररूप सूर्यदेव को हम आवाहित करते हैं। उनकी अनुकम्पा से हम, देवशक्तियों के प्रियपात्र बनें ॥१७,१.२॥

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम् ॥१७,१.३॥

अति सक्षम, सहिष्णु, शत्रुओं के स्वाभाविक हन्ता, शत्रु को दबा डालने में समर्थ, नित्य विजेता, महाबलशाली, स्वसामर्थ्य से दिग्विजय में सक्षम, स्वर्ग को जीतने वाले, भूमि, इन्द्रियों और गौओं तथा ऐश्वर्यों के विजेता, इन्द्र रूप सूर्य को हम आवाहित करते हैं । उनके अनुग्रह से हम प्रजाजनों के प्रिय पात्र बनें ॥१७,१.३॥

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम् ॥१७,१.४॥

अति सक्षम, सहनशील, शत्रुओं के सहज हननकर्ता, वैरों को दबा डालने में समर्थ, महाबलिष्ठ, नित्य विजेता, स्वर्गीय सुखों, भूमि, इन्द्रियों और गौओं तथा वैभव सम्पदा के विजेता, इन्द्ररूप सूर्यदेव को हम आवाहित करते हैं। उनकी अनुकम्पा से हम पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, भेड़, हाथी, घोड़े- ऊँट आदि) के प्रियपात्र बनें ॥१७,१.४॥

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम् ॥१७,१.५॥

अत्यन्त समर्थ, सहनशील, शत्रुओं के स्वाभाविक हन्ता, शत्रुओं को दबाने में सक्षम, महाबली, नित्य विजेता, स्वर्गीय सुखों, भूमि, इन्द्रियों, गौओं तथा धन- सम्पदा के विजेता, इन्द्ररूप सूर्यदेव को हम आवाहित करते हैं। उनकी कृपादृष्टि से हम समवयस्क मनुष्यों के प्रिय रहें ॥१७,१.५॥

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
द्विषंश्च मह्यं रध्यतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहूधा वीर्यानि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.६॥

हे सूर्यदेव ! उदित हों, उदित होकर अपने वर्चस् से हमें प्रकाशित करें, हमसे द्वेष- भाव रखने वाले, हमारे वशीभूत हों; परन्तु हम भूलकर भी विद्वेषी शत्रुओं के चंगुल में न आएँ । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.६॥

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
आंश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद्विष्णो बहूधा वीर्यानि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.७॥

हे सूर्यदेव ! आप उदित हों, उदित होकर अपनी तेजस्विता से हमें प्रकाशित करें । जिन प्राणियों को हम देखते हैं तथा जिन्हें देखने में सक्षम नहीं हैं, उन दोनों के सम्बन्ध में हमें श्रेष्ठ विचारों से प्रेरित करें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में

परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.७॥

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्स्वन्तर्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।
हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम
तवेद्विष्णो बहूधा वीर्यानि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.८॥

हे सूर्यदेव ! जल के बीच पाशधारी (प्रच्छन्नचारी) राक्षस आपको अन्तरिक्षीय जल में दबाने में समर्थ न हो सकें । हे सूर्यदेव ! आप निन्दा भाव त्यागकर द्युलोक में आरूढ़ हों और हमें सुख प्रदान करें। हम आपके अनुग्रहपूर्ण मार्गदर्शन में रहें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.८॥

त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद्विष्णो बहूधा वीर्यानि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.९॥

हे इन्द्रदेव ! सौभाग्य की प्राप्ति के लिए आप अदम्य प्रकाश से हमारा संरक्षण करें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.९॥

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।
आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये
तवेद्विष्णो बहूधा वीर्यानि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.१०॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारा कल्याण करें, अपने संरक्षण साधनों से कल्याणप्रद हों । आप तृतीय स्थान द्युलोक में आरूढ़ होकर सोमरस का पान करते हुए, प्रकाश प्रदान करते हुए और लोक कल्याण करते हुए हमारा संरक्षण करें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१०॥

त्वमिन्द्रासि विश्वजित्सर्ववित्पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।
त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम
तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.११॥

हे परम ऐश्वर्य सम्पन्न इन्द्ररूप सूर्य ! आप समस्त विश्व के विजेता, सर्वज्ञ और प्रशंसनीय हैं । आप उत्तम स्तोत्रों को प्रेरित करें, हमें सुख प्रदान करें, हम आपकी कृपाबुद्धि में स्थित रहें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.११॥

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि सं छर्म यछ
तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.१२॥

हे इन्द्रात्मक सूर्य ! आप द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और पृथ्वी में अदम्य हैं, क्योंकि आप अजस्र शक्ति के स्रोत ब्रह्म द्वारा

निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते रहते हैं। हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१२॥

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या ते इन्द्र पवमाने स्वर्विदि ।
ययेन्द्र तन्वाऽन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वा शर्म यछ तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.१३॥

हे इन्द्ररूप सूर्यदेव ! आप जल में स्थित ओषधि के सारभूत तत्त्वों से हमें सुख प्रदान करें । पृथ्वी और अग्नितत्त्व में जो सुख विद्यमान है, वह हमें प्रदान करें तथा अन्तरिक्ष में संव्याप्त अपने स्वरूप से आप हमारा कल्याण करें । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१३॥

त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्त्रं नि षेदुर्ऋषयो नाधमानास्तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.१४॥

हे इन्द्रात्मक सूर्यदेव ! अभीष्ट फल की कामना से युक्त प्राचीन ऋषि आपको स्तोत्रों से प्रवृद्ध करते हुए सत्र नामक यज्ञ सम्पन्न करने के लिए अनुशासित होकर बैठते थे । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१४॥

त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.१५॥

हे इन्द्रात्मक सूर्यदेव ! आप विस्तृत अन्तरिक्ष में संव्याप्त अनन्त धाराओं से युक्त मेघों को प्राप्त होते हैं । ये मेघ ओषधियों के संवर्धक और यज्ञ के साधनभूत होकर यज्ञ की प्रतिमूर्ति हैं। हे सर्वव्यापक सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न

आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१५॥

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।
त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.१६॥

हे सूर्यदेव ! आप चारों दिशाओं के संरक्षक हैं। आप अपनी तेजस्विता से द्युलोक और पृथ्वी को आलोकित करते हैं और इन सभी लोकों के अनुकूल होकर प्रतिष्ठित होते हैं । ऋतु (यज्ञ-सत्य) को समझकर उसी मार्ग का अनुसरण करते हैं । हे सर्वव्यापक सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१६॥

पञ्चभिः पराङ्तपस्येकयार्वाङशस्तिमेषि सुदिने बाधमानस्तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.१७॥

हे सूर्यदेव ! आप पाँच (किरणों) से ऊपर के लोकों को प्रकाशित करते हैं तथा एक (किरण) से नीचे की ओर प्रकाश फैलाते हैं। इस प्रकार (कुहरे, मेघ आदि से रहित) सुदिन की स्थिति में सभी लोगों द्वारा आप प्रार्थित होते हैं। हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१७॥

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।
तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतस्तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्
॥१७,१.१८॥

हे सूर्यदेव ! आप ही स्वर्गलोक के अधिपति इन्द्र हैं, आप ही पुण्यात्माओं को प्राप्त होने वाले पुण्यलोक हैं। सम्पूर्ण प्रजा के उत्पादक (स्रष्टा) आप ही हैं। साधकगण आपके लिए ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ सम्पन्न करते हैं। हे सर्वव्यापक देव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है,

आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१८॥

असति सत्प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।
भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.१९॥

असत् (प्राकृतिक) जगत् में सत्(चेतन तत्त्व) है और सत् तत्त्व(चेतन तत्त्व) में उत्पन्न हुआ यह जगत् प्रतिष्ठित है। भूत (अतीत) समूह भविष्यत् (आगे होने वाले भूत समूह) में विद्यमान रहता है और भविष्यत् विगत भूत समूह पर आश्रित रहता है । हे विष्णुरूप सूर्यदेव ! आपका असीम (अनन्त) पराक्रमी शौर्य (कार्य) है, आप हमें विभिन्न आकृतियों से युक्त, पशुओं से परिपूर्ण करें तथा अन्त में परमव्योम (स्वर्ग) में प्रतिष्ठित करें और सुधारस से परितृप्त करें ॥१७,१.१९॥

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि ।
स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् ॥१७,१.२०॥

हे सूर्यदेव ! आप तेजस्वी होकर देदीप्यमान रहते हैं। हे देव ! जिस प्रकार आप सम्पूर्ण विश्व को अपनी तेजस्विता से प्रकाशित करते हैं, उसी प्रकार हम (उपासक) भी तेजोमय प्रकाश को प्राप्त करें ॥१७,१.२०॥

रुचिरसि रोचोऽसि ।
स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन च रुचिषीय ॥१७,१.२१॥

हे सूर्यदेव ! आप दीप्तिरूप और देदीप्यमान रहने वाले हैं। जिस प्रकार आप विश्व की प्रकाशक दीप्ति से देदीप्यमान हैं, उसी प्रकार हम भी गौ, अश्वादि पशुओं और ब्रह्मतेजस् से प्रकाशमान रहें ॥१७,१.२१॥

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥१७,१.२२॥

हे सूर्यदेव ! उदीयमान को नमस्कार है, ऊपर उठने वाले को नमस्कार है, उदय हो चुकने वाले को नमस्कार है, विशेष दीप्तिमान् को नमन है, स्वकीय तेजस्विता से जाज्वल्यमान को नमन है तथा उत्कृष्टरूप से प्रकाशमान को हमारा वन्दन है ॥१७,१.२२॥

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥१७,१.२३॥

अस्त होने की स्थिति वाले, अर्धास्त हो चुकने वाले और सम्पूर्णरूप से अस्त हो चुकने वाले आदित्य को नमन है। विशेष तेजवान्, श्रेष्ठ प्रकाशमान तथा स्वकीय तेजस्विता से प्रकाशित होने वाले सूर्यदेव के निमित्त हमारा वन्दन है ॥१७,१.२३॥

उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह ।
सपत्नान् मह्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहूधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥१७,१.२४॥

अपने किरण समूह से सम्पूर्ण लोकों को भली प्रकार प्रकाशित करते हुए सूर्यदेव, हमारे आधि-व्याधि रूप शत्रुओं (विकारों) को दूर करते हुए उदित हो गये हैं। हे सूर्यदेव ! आपकी कृपादृष्टि से हम दुष्ट- विकारों के वशीभूत न हो सकें । हे व्यापक सूर्यदेव ! आपके अनन्त पराक्रम हैं, आप हमें विभिन्न आकारों से युक्त पशुओं से परिपूर्ण करें

। देहत्याग के पश्चात् हमें परम व्योम में अधिष्ठित करें और अमृतरस से तृप्त करें ॥१७,१.२४॥

आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्राति पारय ॥१७,१.२५॥

हे सूर्यदेव ! आप हमारे कल्याण के निमित्त सैकड़ों अरित्रों (डाँडों) से युक्त नाव पर आरोहण करें। आप दिन में और रात्रि के समय भी हमारे साथ रहकर हमें पार करें ॥१७,१.२५॥

सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्राति पारय ॥१७,१.२६॥

हे सूर्यदेव ! आप (आकाश सागर से पार जाने के लिए) विश्व के मंगलार्थ (वायुरूपी) सैकड़ों पतवारों के साथ (रथरूपी) नाव पर आरूढ़ हुए हैं। आपने हमें सकुशल रात्रि के पार पहुँचा दिया है, इसी प्रकार आप हमें दिन के भी पार उतारें ॥१७,१.२६॥

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।

जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् ॥१७,१.२७॥

प्रजापतिरूप सूर्य के ज्ञानरूप कवच से आच्छादित होते हुए हम कश्यप (सर्वदर्शक) के तेज और शक्ति से युक्त होकर वृद्धावस्था पर्यन्त नीरोग रहकर सुदृढ़ अंग- अवयवों से युक्त रहते हुए चिरकाल तक विभिन्न भोगों का उपभोग करें। हमारी गति कहीं अवरुद्ध न हो। हम दीर्घायु पाकर लौकिक और वैदिक सम्पूर्ण क्रियाकलापों को भली प्रकार सम्पन्न करके स्वयं को धन्य बनाएँ । हे सूर्यदेव ! हम आपके कृपापात्र रहें ॥१७,१.२७॥

परिवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
मा मा प्रापन्न् इषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टाः वधाय ॥१७,१.२८॥

हम कश्यप (द्रष्टा) आदित्यदेव के मन्त्ररूप कवच, उनके तेज और रश्मि प्रकाश से संरक्षित रहें । अतएव हमारे संहारार्थ देवों और मनुष्यों द्वारा भेजे गये बाण (आयुधो हमें प्रभावित न करें (अर्थात् हमारे संहार में समर्थ न हों) ॥१७,१.२८॥

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।

मा मा प्रापत्पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः ॥१७,१.२९॥

हम सत्यनिष्ठा से वसन्तादि ऋतुओं से तथा पूर्वकाल और भविष्यकाल में उत्पन्न होने वाले समस्त पदार्थों से संरक्षित रहें । नरक का निमित्त कारण पाप कर्म और मृत्यु हमें प्राप्त न हो। हम मन्त्ररूपी वाणी से स्वयं को रक्षित (परिष्कृत) करते हैं ॥१७,१.२९॥

अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वतः उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।
व्युछन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् ॥१७,१.३०॥

संरक्षक अग्निदेव सभी ओर से हमारी सुरक्षा करें, सूर्यदेव उदित होते समय मृत्यु के रूप में विस्तृत सर्प, अग्नि, व्याघ्र आदि के बन्धनों से मुक्त करें । प्रकाशयुक्त उष:काल और स्थिर पर्वत मृत्यु के बन्धनों का निवारण करें । प्राणशक्ति विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में सचेष्ट होता हुआ हमारी आयुष्य वृद्धि में संलग्न रहे, इन्द्रिय शक्तियाँ भी सतत हममें चेष्टाशील रहें ॥१७,१.३०॥

॥इति सप्तदश काण्डम्॥